

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللّٰهُ के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

يَس ۱ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ۲ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۳ عَلَى صِرَاطٍ

पर राह सीधी तुम² बेशक कुरआन की कसम वाले हक्मत

مُسْتَقِيمٍ ۳ تَنْزِيلِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۴ لِيُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ

भेजे गए हो³ इज्जत वाले मेहरबान का उतारा हुआ ताकि तुम उस कौम को डर सुनाओ

أَبَاؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُونَ ۶ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا

जिस के बाप दादा न डराए गए⁴ तो वोह बे ख़बर हैं बेशक उन में अक्सर पर बात साबित हो चुकी है⁵ तो वोह

يُؤْمِنُونَ ۷ إِنَّا جَعَلْنَا فِيْ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا فَبِهِ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ

ईमान न लाएंगे⁶ हम ने उन की गरदनो में तौक कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह अब ऊपर को

مُّقْبِحُونَ ۸ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا

मुंह उठाए रह गए⁷ और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और उन के पीछे एक दीवार

1 : सूरए “यासीन” मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ, तिरासी आयतें, सात सो उन्तीस कलिमे, तीन हज़ार हुरूफ़ हैं। तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है कि हर चीज़ के लिये क़ल्ब है और कुरआन का क़ल्ब “यासीन” है और जिस ने “यासीन” पढ़ी **اللّٰهُ** तअ़ला उस के लिये दस बार कुरआन पढ़ने का सवाब लिखता है। येह हदीस ग़रीब है और इस की अस्नाद में एक रावी मज़हूल है। अबू दावूद की हदीस में है : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : अपने अम्वात पर “यासीन” पढ़ो। इसी लिये करीबे मौत हालते नज़्म में मरने वालों के पास “यासीन” पढ़ी जाती है। 2 : ऐ सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा ! **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** जो मन्ज़िले मक्सूद को पहुंचाने वाली है, येह राह तौहीदो हिदायत की राह है। तमाम अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** इसी राह पर रहे हैं। इस आयत में कुफ़्फ़र का रद है जो हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहते थे “لَسْتُ مُرْسَلًا” तुम रसूल नहीं हो। इस के बा’द कुरआने करीम की निस्बत इश्राद फ़रमाया 4 : या’नी उन के पास कोई नबी न पहुंचे और कौमे कुरेश का येही हाल है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से पहले उन में कोई रसूल नहीं आया 5 : या’नी हुक्मे इलाही व क़ज़ाए अज़ली उन के अज़ाब पर जारी हो चुकी है और **اللّٰهُ** तअ़ला का इश्राद “لَا مُلْتَنَ جَهُتُمْ مِنَ الْحِجَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ” उन के हक़ में साबित हो चुका है और अज़ाब का उन के लिये मुक़रर हो जाना इस सबब से है कि वोह कुफ़्र व इन्कार पर अपने इख़्तियार से मुसिर रहने वाले हैं। 6 : इस के बा’द उन के कुफ़्र में पुख़्ता होने की एक तम्सील इश्राद फ़रमाई 7 : येह तम्सील है उन के कुफ़्र में ऐसे रासिख़ होने की कि आयात व नज़्म, पन्दो हिदायत किसी से वोह मुन्तफ़ेअ नहीं हो सकते जैसे कि वोह शख़्स जिन की गरदनो में गिल की किस्म का तौक पड़ा हो जो ठोड़ी तक पहुंचता है और इस की वजह से वोह सर नहीं झुका सकते येही हाल उन का है कि किसी तरह उन को हक़ की तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं होता और उस के हुज़ूर सर नहीं झुकाते। और बा’ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया है कि येह उन की हकीकते हाल है जहन्नम में उन्हें इसी तरह का अज़ाब किया जाएगा जैसा की दूसरी आयत में **اللّٰهُ** तअ़ला ने इश्राद फ़रमाया “إِذَا لَأَغْلَالٌ فِيْ أَعْنَاقِهِمْ” शाने नुज़ूल : येह आयत अबू जहल और उस के दो मख़ज़ूमी दोस्तों के हक़ में नाज़िल हुई। अबू जहल ने क़सम खाई कि अगर वोह सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को नमाज़ पढ़ते देखेगा तो पथर से सर कुचल डालेगा। जब उस ने हुज़ूर को नमाज़ पढ़ते देखा तो वोह इसी इरादए फ़ासिदा से एक भारी पथर ले कर आया, जब उस पथर को उठाया तो उस के हाथ गरदन में चिपके रह गए और पथर हाथ को लिपट गया, येह हाल देख कर अपने दोस्तों की तरफ़ वापस हुआ और उन से वाकिआ बयान किया तो उस के दोस्त वलीद बिन मुगीरा ने कहा कि येह काम मैं करूंगा और मैं उन का सर कुचल कर ही आऊंगा। चुनान्चे वोह पथर ले कर आया, हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे, जब येह करीब पहुंचा तो **اللّٰهُ** तअ़ला ने उस की बीनाई सल्ब कर ली, हुज़ूर की आवाज़ सुनता था आंखों से नहीं देख सकता था

فَاغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۹ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ

और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता⁸ और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न

تُنذِرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۱۰ إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ

डराओ वोह ईमान लाने के नहीं तुम तो उसी को डर सुनाते हो⁹ जो नसीहत पर चले और रहमान से

الرَّحْمَنِ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِبَغْفَرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۱۱ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي

वे देखे डरे तो उसे बख्शिश और इज्जत के सवाब की बिशारत दो¹⁰ बेशक हम मुर्दों को जिलाएं (जिन्दा करें)

الْمَوْتَى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۱۲ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ

गे और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने ने आगे भेजा¹¹ और जो निशानियां पीछे छोड़ गए¹² और हर चीज हम ने गिन रखी है एक बताते

येह भी परेशान हो कर अपने यारों की तरफ लौटा वोह भी नजर न आए, उन्होंने ने ही उसे पुकारा और उस से कहा : तू ने क्या किया ? कहने लगा कि मैं ने उन की आवाज तो सुनी मगर वोह मुझे नजर ही नहीं आए । अब अबू जहल के दूसरे दोस्त ने दा'वा किया कि वोह इस काम को अन्जाम देगा और बड़े दा'वे के साथ वोह हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तरफ चला था कि उल्टे पाउं ऐसा बद हवास हो कर भागा कि औंधे मुंह गिर गया । उस के दोस्तों ने हाल पूछा तो कहने लगा कि मेरा हाल बहुत सख्त है मैं ने एक बहुत बड़ा सांड देखा जो मेरे और हुजूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) के दरमियान हाइल हो गया, लात व उज्जा की कसम अगर मैं जरा भी आगे बढ़ता तो वोह मुझे खा ही जाता, इस पर येह आयत नाजिल हुई । 8 : (طَارِزٌ وَمِثْلٌ) येह भी तम्सील है कि जैसे किसी शख्स के लिये दोनों तरफ दीवारें हों और हर तरफ से रास्ता बन्द कर दिया गया हो वोह किसी तरह मन्जिले मकसूद तक नहीं पहुंच सकता येही हाल उन कुफ़र का है कि उन पर हर तरफ से ईमान की राह बन्द है, सामने उन के गुरुरे दुन्या (दुन्या के धोके) की दीवार है और उन के पीछे तक्ज़ीबे आखिरत की और वोह जहालत के कैदखाने में महबूस हैं, आयात व दलाइल में नजर करना उन्हें मुयस्सर नहीं । 9 : या'नी आप के डर सुनाने और खौफ दिलाने से वोही नफ़अ उठाता है 10 : या'नी जन्नत की । 11 : या'नी दुन्या की जिन्दगानी में जो नेकी या बदी की ताकि उस पर जजा दी जाए । 12 : या'नी और हम उन की वोह निशानियां वोह तरीके भी लिखते हैं जो वोह अपने बा'द छोड़ गए ख़्वाह वोह तरीके नेक हों या बद । जो नेक तरीके उम्मती निकालते हैं उन को **बिद्अते हसना** कहते हैं और इस तरीके के निकालने वालों और अमल करने वालों दोनों को सवाब मिलता है और जो बुरे तरीके निकालते हैं उन को **बिद्अते सय्यिया** कहते हैं इस तरीके के निकालने वाले और अमल करने वाले दोनों गुनाहगार होते हैं । मुस्लिम शरीफ की हदीस में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिस शख्स ने इस्लाम में नेक (अच्छा) तरीका निकाला उस को तरीका निकालने का भी सवाब मिलेगा और उस पर अमल करने वालों का भी सवाब बिगैर इस के कि अमल करने वालों के सवाब में कुछ कमी की जाए और जिस ने इस्लाम में बुरा तरीका निकाला तो उस पर वोह तरीका निकालने का भी गुनाह और उस तरीके पर अमल करने वालों के भी गुनाह बिगैर इस के कि उन अमल करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी की जाए । इस से मा'लूम हुवा कि सदहा उमरे खैर मिस्ले फ़ातिहा, ग्यारहवीं व तीजा व चालीसवां व उर्स व तोशा व ख़त्म व महाफ़िले जिक्रे मीलाद व शहादत जिन को बद मजहब लोग बिद्अत कह कर मन्अ करते हैं और लोगों को इन नेकियों से रोकते हैं येह सब दुरुस्त और बाइसे अज्रो सवाब हैं और इन को बिद्अते सय्यिया बताना गुलत व बातिल है, येह ताआत और आ'माले सालिहा जो जिक्रो तिलावत और सदका व खैरात पर मुश्तमिल हैं बिद्अते सय्यिया नहीं, बिद्अते सय्यिया वोह बुरे तरीके हैं जिन से दीन को नुक़सान पहुंचता है और जो सुन्नत के मुख़ालिफ़ हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया कि जो कौम बिद्अत निकालती है उस से एक सुन्नत उठ जाती है तो बिद्अते सय्यिया वोही है जिस से सुन्नत उठती हो जैसे कि रिफ़ज़, खुरूज, वहाबिय्यत येह सब इन्तिहा दरजे की ख़राब सय्यिया बिद्अतें हैं । रिफ़ज़ व खुरूज जो अस्हाब व अहले बैते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की अ़दावत पर मन्वी हैं, इन से अस्हाब व अहले बैत के साथ महब्वत व नियाज़ मन्दी रखने की सुन्नत उठ जाती है जिस के शरीअत में ताकीदी हुक्म हैं । वहाबिय्यत की अस्ल मक़बूलाने हक़ हज़रते अम्बिया व औलिया की जनाब में बे अदबी व गुस्ताखी और तमाम मुसल्मानों को मुशिरक करार देना है, इस से बुजुगाने दीन की हुरमत व इज़्जत और अदबो तकरीम और मुसल्मानों के साथ अखुव्वत व महब्वत की सुन्नतें उठ जाती हैं जिन की बहुत शदीद ताकीदें हैं और जो दीन में बहुत ज़रूरी चीज़ें हैं । और इस आयत की तफ़सीर में येह भी कहा गया है कि आसार से मुराद वोह कदम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की तरफ़ चलने में रखता है और इस मा'ना पर आयत का शाने नुज़ूल येह बयान किया गया है कि बनी सलमा मदीनाए तय्यिबा के कनारे पर रहते थे, उन्होंने ने चाहा कि मस्जिद शरीफ़ के करीब आ बसें, इस पर येह आयत नाजिल हुई और सय्यिदे आलम

مَبِينٌ ١٢ وَأَضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ١٣

15 आए फ़िरस्तादे के पास उन के जब उनकी शहर वालों की 14 उस बयान से उन से 13 में किताब वाली

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا

18 कि हम ने उन को सब ने कहा अब उन से जोर दिया 17 उनको ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से जोर दिया 16 भेजे की तरफ़ दो हम ने उन

إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ ١٣ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ

और रहमान जैसे हम मगर नहीं तुम तो बोलें हैं गए भेजे तरफ़ हम तुम्हारी

الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ١٤ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا سَكْدِبُونَ ١٥ قَالُوا رَبَّنَا عَلَّمْنَا

रुबर कि है जानता हमरा खब बोले वोह जोह झूटे हो तुम निरे उतारा नहीं कुछ ने

ने फरमाया कि तुम्हारे कदम लिखे जाते हैं तुम मकान तब्दील न करो या'नी जितनी दूर से आओगे उतने ही कदम ज़ियादा पड़ेंगे और अज्रो सवाब ज़ियादा होगा । 13 : या'नी लौहे महफूज़ में । 14 : उस शहर से मुराद अन्ताकिया है, येह एक बड़ा शहर है, इस में चश्मे हैं, कई पहाड़ हैं, एक संगीन शहर पनाह है, बारह मील के दौर में बसता है । 15 : हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के वाकिए का मुख्तसर बयान येह है कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने दो हवारियों सादिक् व सदूक को अन्ताकिया भेजा ताकि वहां के लोगों को जो बुत परस्त थे दीने हक़ की दा'वत दें, जब येह दोनों शहर के क़रीब पहुंचे तो उन्होंने एक बूढ़े शख्स को देखा कि बकरियां चरा रहा है उस का नाम हबीब नज्जार था, उस ने उन का हाल दरयाप्त किया, उन दोनों ने कहा कि हम हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के भेजे हुए हैं, तुम्हें दीने हक़ की दा'वत देने आए हैं कि बुत परस्ती छोड़ कर खुदा परस्ती इख्तियार करो । हबीब नज्जार ने निशानी दरयाप्त की । उन्होंने कहा कि निशानी येह है कि हम बीमारों को अच्छा करते हैं, अन्धों को बीना करते हैं, बरस वाले का मरज़ दूर कर देते हैं । हबीब नज्जार का एक बेटा दो साल से बीमार था उन्होंने उस पर हाथ फेरा और वोह तन्दुरुस्त हो गया, हबीब ईमान लाए और इस वाकिए की खबर मशहूर हो गई ता आंकि एक खल्के कसीर ने उन के हाथों अपने अमराज से शिफा पाई, येह खबर पहुंचने पर बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा : क्या हमारे मा'बूदों के सिवा और कोई मा'बूद भी है ? उन दोनों ने कहा : हां वोही जिस ने तुझे और तेरे मा'बूदों को पैदा किया, फिर लोग उन के दरपै हुए और उन्हें मारा और येह दोनों कैद कर लिये गए । फिर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने शम्ज़न को भेजा वोह अजनबी बन कर शहर में दाखिल हुए और बादशाह के मुसाहिबीन व मुकर्रबीन से रस्मो राह पैदा कर के बादशाह तक पहुंचे और उस पर अपना असर पैदा कर लिया, जब देखा कि बादशाह इन से खूब मानूस हो गया है तो एक रोज़ बादशाह से ज़िक्र किया कि दो आदमी जो कैद किये गए हैं क्या उन की बात सुनी गई थी वोह क्या कहते थे ? बादशाह ने कहा : नहीं जब उन्होंने ने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे गुस्सा आ गया । शम्ज़न ने कहा कि अगर बादशाह की राय हो तो उन्हें बुलाया जाए देखें उन के पास क्या है । चुनान्चे वोह दोनों बुलाए गए । शम्ज़न ने उन से दरयाप्त किया तुम्हें किस ने भेजा है ? उन्होंने कहा कि उस **अब्बाह** ने जिस ने हर चीज़ को पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिस का कोई शरीक नहीं । शम्ज़न ने कहा कि उस की मुख्तसर सिफ़त बयान करो । उन्होंने कहा : वोह जो चाहता है करता है, जो चाहता है हुक़म देता है । शम्ज़न ने कहा : तुम्हारी निशानी क्या है ? उन्होंने कहा : जो बादशाह चाहे । तो बादशाह ने एक अन्धे लड़के को बुलाया, उन्होंने ने दुआ की वोह फ़ौरन बीना हो गया । शम्ज़न ने बादशाह से कहा कि अब मुनासिब येह है कि तू अपने मा'बूदों से कह कि वोह भी ऐसा ही कर के दिखाएं ताकि तेरी और उन की इज़्ज़त ज़ाहिर हो । बादशाह ने शम्ज़न से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है, हमारा मा'बूद न देखे न सुने न कुछ बिगाड़ सके, न बना सके फिर बादशाह ने उन दोनों हवारियों से कहा कि अगर तुम्हारे मा'बूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की कुदरत हो तो हम उस पर ईमान ले आए । उन्होंने कहा कि हमारा मा'बूद हर शै पर कादिर है । बादशाह ने एक दिहकान (दीहाती) के लड़के को मंगाया जिस को मरे हुए सात दिन हो गए थे और जिस्म खराब हो चुका था, बदबू फैल रही थी, उन की दुआ से **अक्लुस** तआला ने उस को ज़िन्दा किया और उठ खड़ा हुवा और कहने लगा कि मैं मुशिरक मरा था, मुझे को जहन्नम की सात वादियों में दाखिल किया गया, मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि जिस दीन पर तुम हो बहुत नुक्सान देह है, ईमान लाओ और कहने लगा कि आस्मान के दरवाजे खुले और एक हसीन जवान मुझे नज़र आया जो इन तीनों शख्सों की सिफ़ारिश करता है । बादशाह ने कहा : कौन तीन ? उस ने कहा : एक शम्ज़न और दो येह । बादशाह को तअज़्जुब हुवा, जब शम्ज़न ने देखा कि उस की बात बादशाह में असर कर गई तो उस ने बादशाह को नसीहत की, वोह ईमान लाया और उस की क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ ईमान न लाए और अज़ाबे इलाही से हलाक किये गए । 16 : या'नी दो हवारी । वहब ने कहा कि उन के नाम यूहन्ना और बूलिस थे और का'ब का क़ौल है कि सादिक् व सदूक । 17 : या'नी शम्ज़न से तक्वियत और ताईद पहुंचाई । 18 : या'नी तीनों फ़िरस्तादों (कासिदों) ने ।

إِلَيْكُمْ لَنْرَسَلُونَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَدْعُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾ قَالُوا إِنَّا

हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं और हमारे जिम्मे नहीं मगर साफ पहुंचा देना¹⁹ बोले हम

تَطِيرْنَا بِكُمْ لَيْنِ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجِسَنَّكُمْ وَلَيَسَنَّكُمْ مِّنْ أَعْدَابِ

तुम्हें मन्हूस समझते हैं²⁰ बेशक तुम अगर बाज न आए²¹ तो जरूर तुम्हें संगसार करेंगे बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की

الْيَمِّ ﴿١٨﴾ قَالُوا ظَهَرْنَا مَعَكُمْ ط إِنِّ ذُكِّرْتُمْ ط بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ

मार पड़ेगी उन्होंने ने फरमाया तुम्हारी नुहसत तो तुम्हारे साथ है²² क्या इस पर बिदक्ते हो कि तुम समझाए गए²³ बल्कि तुम हृद से

مُّسْرِفُونَ ﴿١٩﴾ وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَّسْعَى قَالَ يَاقَوْمِ

बढ़ने वाले लोग हो²⁴ और शहर के परले कनारे से एक मर्द दौड़ता आया²⁵ बोला ऐ मेरी कौम

اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٠﴾ اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

भेजे हुआ की पैरवी करो ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अन्न) नहीं मांगते और वोह राह पर हैं²⁶

19 : अदिल्लए वाजिहा के साथ और वोह अन्धों और बीमारों को अच्छा करना और मुर्दों को जिन्दा करना है । 20 : जब से तुम आए हो बारिश ही नहीं हुई । 21 : अपने दीन की तब्लीग से 22 : या'नी तुम्हारा कुफ़र 23 : और तुम्हें इस्लाम की दा'वत दी गई 24 : ज़लाल व तुयान में और येही बड़ी नुहसत है । 25 : या'नी हबीब नज्जार जो पहाड़ के गार में मसरूफ़े इबादते इलाही था, जब उस ने सुना कि कौम ने उन फ़िरिस्तादों (कासिदों) की तक्ज़ीब की । 26 : हबीब नज्जार की येह गुफ्तगू सुन कर कौम ने कहा कि क्या तू इन के दीन पर है और तू इन के मा'बूद पर ईमान ले आया ? इस के जवाब में हबीब नज्जार ने कहा ।

وَمَا لِي لَا أَعْبُدُ الزَّمِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تَرْجِعُونَ ﴿٢٣﴾ ءَأَتَّخِذُ مِنْ

और मुझे क्या है कि उस की बन्दगी न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है²⁷ क्या **अल्लाह** के सिवा

دُونِهِ إِلَهَةٌ إِنْ يُرِيدَنَّ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِي عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا

और खुदा ठहराऊँ²⁸ कि अगर रहमान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और

لَا يُنْقِذُونِ ﴿٢٣﴾ إِنْ أَرَادَ اللَّيْقَىٰ صَلِّ مَبِينٍ ﴿٢٣﴾ إِنْ أَمِنْتُ بِرَبِّكُمْ

न वोह मुझे बचा सके बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूँ²⁹ मुकर्रर (यकीनन) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया

فَأَسْعُونَ ﴿٢٥﴾ قَبِيلٌ أَدْخَلَ الْجَنَّةَ ط قَالَ يَلِيَّتْ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾ بِمَا

तो मेरी सुनो³⁰ उस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो³¹ कहा किसी तरह मेरी कौम जानती जैसी

غَفَرْتُ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْبُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾ وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ

मेरे रब ने मेरी मग़िफ़रत की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया³² और हम ने इस के बा'द उस की कौम पर

بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٢٨﴾ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صِيْحَةً

आस्मान से कोई लश्कर न उतारा³³ और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था वोह तो बस एक

وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خِدُودٌ ﴿٢٩﴾ يُحَسِرَةً عَلَىٰ الْعِبَادِ هَ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ

ही चीख़ थी जभी वोह बुझ कर रह गए³⁴ और कहा गया कि हाए अफ़सोस उन बन्दों पर³⁵ जब उन के पास कोई

رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَفْزِعُونَ ﴿٣٠﴾ أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ

रसूल आता है तो उस से ठग़ ही करते हैं क्या उन्होंने ने न देखा³⁶ हम ने उन से पहले कितनी संगतें

27 : या'नी इब्दिदाए हस्ती से जिस की हम पर ने'मतें हैं और आख़िर कार भी उसी की तरफ़ रुजूअ करना है उस मालिके हकीकी की इबादत न करना क्या मा'ना ! और उस की निस्वत ए'तिराज़ कैसा ! हर शख़्स अपने वुजूद पर नज़र कर के उस के हक्के ने'मत व एहसान को पहचान सकता है । 28 : या'नी क्या बुतों को मा'बूद बनाऊँ 29 : जब हबीब नज्जार ने अपनी कौम से ऐसा नसीहत आमेज़ कलाम किया तो वोह लोग उन पर यक्वारगी टूट पड़े और उन पर पथराव शुरू किया और पाउं से कुचला यहां तक कि क़त्ल कर डाला, क़ब्र उन की अन्ताकिया में है । जब कौम ने उन पर हम्ला शुरू किया तो उन्होंने ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالسَّلَام के फ़िरिस्तादों से बहुत जल्दी कर के येह कहा : 30 : या'नी मेरे ईमान के शाहिद रहो ! जब वोह क़त्ल हो चुके तो ब त्रीके इक्राम 31 : जब वोह जन्नत में दाख़िल हुए और वहां की ने'मतें देखीं 32 : हबीब नज्जार ने येह तमन्ना की, कि उन की कौम को मा'लूम हो जाए कि **अल्लाह** तआला ने हबीब की मग़िफ़रत की और इक्राम फ़रमाया ताकि कौम को मुर्सलीन के दीन की तरफ़ रग़बत हो । जब हबीब क़त्ल कर दिये गए तो **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त का उस कौम पर ग़ज़ब हुवा और उन की उक़ूबत व सज़ा में ताख़ीर न फ़रमाई गई, हज़रते जिब्रील को हुक्म हुवा और उन की एक ही होलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए । चुनान्चे इशाद फ़रमाया जाता है : 33 : उस कौम की हलाकत के लिये 34 : फ़ना हो गए जैसे आग बुझ जाती है । 35 : उन पर और उन की मिस्ल और सब पर जो रसूलों की तक्ज़ीब कर के हलाक हुए 36 : या'नी अहले मक्का ने जो नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तक्ज़ीब करते हैं कि ।

الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾ وَإِن كُلُّ لِسَابٍ جِدِّ لَدَيْنَا

हलाक फ़रमाई कि वोह अब उन की तरफ़ पलटने वाले नहीं³⁷ और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुजूर हाज़िर

مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْبَيْتَةُ ۗ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا

लाए जाएंगे³⁸ और उन के लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है³⁹ हम ने उसे ज़िन्दा किया⁴⁰ और फिर उस से अनाज

حَبَّافِينَهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرْنَا

निकाला तो उस में से खाते हैं और हम ने उस में⁴¹ बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हम ने

فِيهَا مِنَ الْعْيُونِ ۗ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ ۚ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ۗ أَفَلَا

उस में कुछ चश्मे बहाए कि उस के फलों में से खाएं और येह उन के हाथ के बनाए नहीं तो क्या

يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾ سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ وَاجْعَلْ لَّهَا مِمَّا تُثْبِتُ الْأَرْضُ

हक़ न मानेंगे⁴² पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े बनाए⁴³ उन चीजों से जिन्हें ज़मीन उगाती है⁴⁴

وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ ۗ نَسُدُّ عَنْهُمْ

और खुद उन से⁴⁵ और उन चीजों से जिन की उन्हें खबर नहीं⁴⁶ और उन के लिये एक निशानी⁴⁷ रात है हम उस पर से दिन

النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۗ ذَٰلِكَ

खींच लेते हैं⁴⁸ जभी वोह अंधेरे में हैं और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये⁴⁹ येह

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ

हुक्म है ज़बर दस्त इल्म वाले का⁵⁰ और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुकर्र कीं⁵¹ यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी

37 : या'नी दुनिया की तरफ़ लौटने वाले नहीं। क्या येह लोग उन के हाल से इब्रत हासिल नहीं करते। 38 : या'नी तमाम उम्रमें रोज़े क्रियामत

हमारे हुजूर हिसाब के लिये मौक़िफ़ में हाज़िर की जाएंगी। 39 : जो इस पर दलालत करती है कि **अल्लाह** तआला मुर्दा को ज़िन्दा फ़रमाएगा।

40 : पानी बरसा कर 41 : या'नी ज़मीन में 42 : और **अल्लाह** तआला की नेमतों का शुक़ बजा न लाएंगे। 43 : या'नी अस्नाफ़ व अक्साम।

44 : गुल्ले फल वगैरा 45 : औलादे जुकूर व उनास (मुजक्कर और मुअन्नस औलाद) 46 : बहरो बर की अज़ीबो ग़रीब मख़्तूक़ात में से

जिस की इन्सानों को खबर भी नहीं है। 47 : हमारी कुदरते अज़ीमा पर दलालत करने वाली। 48 : तो बिल्कुल तारीक़ रह जाती है जिस

तरह काले भुजंगे (इन्तिहाई काले) हब्शी का सफ़ेद लिबास उतार लिया जाए तो फिर वोह सियाह ही सियाह रह जाता है। इस से मा'लूम

हुवा कि आस्मान व ज़मीन के दरमियान की फ़ज़ा अस्ल में तारीक़ है आफ़ताब की रोशनी उस के लिये एक सफ़ेद लिबास की तरह है, जब

आफ़ताब गुरूब हो जाता है तो येह लिबास उतर जाता है और फ़ज़ा अपनी अस्ल हालत में तारीक़ रह जाती है। 49 : या'नी जहां तक उस

की सेर की निहायत (हद) मुकर्र फ़रमाई गई है और वोह रोज़े क्रियामत है उस वक़्त तक वोह चलता ही रहेगा या येह मा'ना हैं कि वोह अपनी

मन्ज़िलों में चलता है और जब सब से दूर वाले मग़रिब में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है क्यूं कि येही उस का मुस्तकर है। 50 : और येह

निशानी है जो उस की कुदरते कामिला और हिक्मते बालिगा पर दलालत करती है। 51 : चांद की अठ्ठाईस मन्ज़िलें हैं, हर शब एक मन्ज़िल

में होता है और पूरी मन्ज़िल तै कर लेता है, न कम चले न ज़ियादा, तुलूअ की तारीख़ से अठ्ठाईसवीं तारीख़ तक तमाम मन्ज़िलें तै कर लेता

है और अगर महीना तीस का हो तो दो शब और उन्तीस हो तो एक शब छुपता है और जब अपने आख़िर मनाज़िल में पहुंचता है तो बारीक़

الْقَدِيمِ ٣٩ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ

डाल (टहनी)⁵² सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले⁵³ और न रात दिन पर

النَّهَارِ ط وَكُلٌّ فِي فَلَكَ يَسْبَحُونَ ٤٠ وَآيَةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي

सबकत ले जाए⁵⁴ और हर एक एक घरे में पर रहा है और उन के लिये एक निशानी यह है कि उन्हें उन के बुजुर्गों की पीठ में हम

الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ٤١ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ٤٢ وَإِنْ نَشَاءُ

ने भरी कश्ती में सुवार किया⁵⁵ और उन के लिये वैसी ही कश्तियां बना दें जिन पर सुवार होते हैं और हम चाहें तो

نُعْرِقَهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَدُونَ ٤٣ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا

उन्हें डुबो दें⁵⁶ तो न कोई उन की फरियाद को पहुंचने वाला हो और न वोह बचाए जाएं मगर हमारी तरफ की रहमत और एक वक़्त

إِلَىٰ حِينٍ ٤٤ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ

तक बरतने देना⁵⁷ और जब उन से फरमाया जाता है डरो तुम उस से जो तुम्हारे सामने है⁵⁸ और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है⁵⁹ इस उम्मीद पर

تُرْحَمُونَ ٤٥ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا

कि तुम पर मेहर हो तो मुंह फेर लेते हैं और जब कभी उन के रब की निशानियों से कोई निशानी उन के पास आती है तो मुंह

مُعْرِضِينَ ٤٦ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ

ही फेर लेते हैं⁶⁰ और जब उन से फरमाया जाए **اتَّقُوا** के दिये में से कुछ उस की राह में खर्च करो तो काफ़िर

كَفَرُوا وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْطَعِمُ مَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ اطَّعَمَهُ ٤٧ إِنَّ أَنْتُمْ

मुसलमानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे **اتَّقُوا** चाहता तो खिला देता⁶¹ तुम तो नहीं

और कमान की तरह खमीदा और जर्द हो जाता है। 52 : जो सूख कर पतली और खमीदा और जर्द हो गई हो। 53 : या'नी शब में जो उस के जुहरे शौकत का वक़्त है उस के साथ जम्अ हो कर उस के नूर को मगलूब करे, क्यूं कि सूरज और चांद में से हर एक के जुहरे शौकत के लिये एक वक़्त मुकर्रर है, सूरज के लिये दिन और चांद के लिये रात। 54 : कि दिन का वक़्त पूरा होने से पहले आ जाए। ऐसा भी नहीं बल्कि रात और दिन दोनों मुअय्यन हिसाब के साथ आते जाते हैं, कोई उन में से अपने वक़्त से कब्ल नहीं आता और नय्यरेन या'नी आफ़ताब व महताब में से कोई दूसरे के हुदूदे शौकत में दाखिल नहीं होता, न आफ़ताब रात में चमके न माहताब दिन में। 55 : जो सामाने अस्बाब वग़ैरा से भरी हुई थी। मुराद इस से कश्तिये नूह है जिस में उन के पहले अज्दाद सुवार किये गए थे और येह उन की जुर्रियतें उन की पुशत में थीं। 56 : बा वुजूद कश्तियों के 57 : जो उन की जिन्दगानी के लिये मुकर्रर फरमाया है। 58 : या'नी अज़ाबे दुन्या 59 : या'नी अज़ाबे आख़िरत 60 : या'नी उन का दस्तूर और तरीकए कार ही येह है कि वोह हर आयत व मौइज़त से ए'राज व रूगर्दानी किया करते हैं। 61 : शाने नुज़ूल : येह आयत कुफ़फ़ारे कुरैश के हक़ में नाज़िल हुई जिन से मुसलमानों ने कहा था कि तुम अपने मालों का वोह हिस्सा मिस्कीनों पर खर्च करो जो तुम ने ब जो'मे खुद **اتَّقُوا** तआला के लिये निकाला है। इस पर उन्होंने ने कहा कि क्या हम उन को खिलाएं जिन्हें **اتَّقُوا** तआला खिलाना चाहता तो खिला देता, मत्लब येह था कि खुदा ही को मिस्कीनों का मोहताज रखना मन्ज़ूर है तो उन्हें खाने को देना उस की मशियत के खिलाफ़ होगा। येह बात उन्होंने ने बख़ीली और कन्जूसी से बतौर तमस्खुर के कही थी और निहायत बातिल थी क्यूं कि दुन्या "दारुल इम्तहान" (इम्तहान की जगह) है। फ़कीरी और अमीरी दोनों आज्माइशें हैं : फ़कीर की आज्माइश सब्र से और ग़नी की

إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٤﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

मगर खुली गुमराही में और कहते हैं कब आएगा यह वा'दा⁶² अगर तुम सच्चे हो⁶³

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّصُونَ ﴿٣٩﴾ فَلَا

राह नहीं देखते मगर एक चीख की⁶⁴ कि उन्हें आ लेगी जब वोह दुनिया के झगड़े में फंसे होंगे⁶⁵ तो न

يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ

वसियत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं⁶⁶ और फूँका जाएगा सूर⁶⁷

فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ﴿٥١﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَنْ

जभी वोह कब्रों से⁶⁸ अपने रब की तरफ दौड़ते चलेंगे कहेंगे हाए हमारी खराबी किस ने

بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۚ هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

हमें सोते से जगा दिया⁶⁹ यह है वोह जिस का रहमान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने हक़ फरमाया⁷⁰

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़⁷¹ जभी वोह सब के सब हमारे हुजूर हाज़िर हो जाएंगे⁷²

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

तो आज किसी जान पर कुछ जुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का

“इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह” (राहे खुदा में खर्च करने) से। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما से मरवी है कि मक्काए मुकर्रमा में ज़िन्दीक़ लोग थे जब उन से कहा जाता था कि मिस्कीनों को सदका दो तो कहते थे हरगिज़ नहीं यह कैसे हो सकता है कि जिस को **اَللّٰهُ** तआला मोहताज करे हम खिलाएं। 62 : बअस व क़ियामत का 63 : अपने दा'वे में। इन का येह ख़िताब नबिये करीम صلى الله تعالى عليه وسلم और आप के अस्थाब से था। **اَللّٰهُ** तआला इन के हक़ में फरमाता है : 64 : या'नी सूर के पहले नफ़्खे की जो हज़रते इसराफ़ील عليه السلام फूँकेगे। 65 : ख़रीदो फ़रोख़्त में और खाने पीने में और बाज़ारों और मजलिसों में, दुनिया के कामों में कि अचानक क़ियामत काइम हो जाएगी। हदीस शरीफ़ में है नबिये करीम صلى الله تعالى عليه وسلم ने फरमाया कि ख़रीदार और बाएअ के दरमियान कपड़ा फैला होगा न सौदा तमाम होने पाएगा न कपड़ा लिपट सकेगा कि क़ियामत काइम हो जाएगी या'नी लोग अपने अपने कामों में मशगूल होंगे और वोह काम वैसे ही ना तमाम रह जाएंगे, न उन्हें खुद पूरा कर सकेंगे न किसी दूसरे से पूरा करने को कह सकेंगे और जो घर से बाहर गए हैं वोह वापस न आ सकेंगे। चुनान्चे इश्राद होता है : 66 : वहीं मर जाएंगे और क़ियामत फुरसत व मोहलत न देगी। 67 : दूसरी मरतबा। येह नफ़्ख़ए सानिया है जो मुर्दों के उठाने के लिये होगा और उन दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान चालीस साल का फ़सिला होगा। 68 : ज़िन्दा हो कर 69 : येह मक़ूला कुफ़फ़र का होगा। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما ने फरमाया कि वोह येह बात इस लिये कहेंगे कि **اَللّٰهُ** तआला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान उन से अज़ाब उठा देगा और इतना ज़माना वोह सोते रहेंगे और नफ़्ख़ए सानिया के बा'द जब उठाए जाएंगे और अहवाले क़ियामत देखेंगे तो इस तरह चीख़ उठेंगे और येह भी कहा गया है कि जब कुफ़फ़र जहन्म और उस के अज़ाब देखेंगे तो उस के मुक़ाबले में अज़ाबे क़ब्र उन्हें सहल मा'लूम होगा इस लिये वोह वैल (हाए हमारी खराबी) व अफ़सोस पुकार उठेंगे और उस वक्त कहेंगे : 70 : और उस वक्त का इक़्रार उन्हें कुछ नाफ़ेअ न होगा। 71 : या'नी “नफ़्ख़ए अख़ीरा” एक होलनाक आवाज़ होगी। 72 : हिसाब के लिये। फिर उन से कहा जाएगा।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَكِهِونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي

बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं⁷³ वोह और उन की बीबियां

ظَلَّلِ عَلَى الْأَرَآءِكِ مُتَكِوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ﴿٥٧﴾

सायों में हैं तख्तों पर तक्या लगाए उन के लिये उस में मेवा है और उन के लिये है उस में जो मांगें

سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَاذُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْجَرْمُونَ ﴿٥٩﴾

उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा⁷⁴ और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो⁷⁵

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَىٰ أَدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ

ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से अहद न लिया था⁷⁶ कि शैतान को न पूजना⁷⁷ बेशक वोह तुम्हारा खुला

مُبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَأَنْ أَعْبُدُونِي ۗ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ

दुश्मन है और मेरी बन्दगी करना⁷⁸ यह सीधी राह है और बेशक उस ने तुम में

مِّنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ

से बहुत सी खल्कत को बहका दिया तो क्या तुम्हें अक्ल न थी⁷⁹ यह है वोह जहन्नम जिस का तुम से

تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾ إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾ الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ

वा'दा था आज इस में जाओ बदला अपने कुफ़र का आज हम उन के मूंहों पर मोहर

أَفْوَاهِهِمْ وَنُكَلِّمُنَا أَيْدِيَهُمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾

कर देंगे⁸⁰ और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पाउं उन के किये की गवाही देंगे⁸¹

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنىٰ يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾ وَ

और अगर हम चाहते तो उन की आंखें मिटा देते⁸² फिर लपक कर रस्ते की तरफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता⁸³ और

73 : तरह तरह की ने'मतें और किस किस के सुख और **अल्लाह** तआला की तरफ़ से जियाफ़्त, जन्नती नहरों के कनारे बिहिश्ती अश्जार की दिल नवाज़ फ़जाएं, तुरब अंगेज़ नग़मात, हसीनाने जन्नत का कुर्ब और किस किस की ने'मतों से इल्लिज्जाज़ (लज्जत हासिल करना) यह उन के शग़ल होंगे। 74 : या'नी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उन पर सलाम फ़रमाएगा ख़्वाह ब वासिता या बे वासिता और यह सब से बड़ी और प्यारी मुराद है, मलाएका अहले जन्नत के पास हर दरवाजे से आ कर कहेंगे तुम पर तुम्हारे रहमत वाले रब का सलाम। 75 : जिस वक़्त मोमिन जन्नत की तरफ़ रवाना किये जाएंगे उस वक़्त कुफ़र से कहा जाएगा कि अलग फट जाओ मोमिनीन से अ़लाहदा हो जाओ और एक कौल यह भी है कि यह हुक्म कुफ़र को होगा कि अलग अलग जहन्नम में अपने अपने मक़ाम पर जाएं। 76 : अपने अम्बिया की मा'रिफ़त 77 : उस की फ़रमां बरदारी न करना। 78 : और किसी को इबादत में मेरा शरीक न करना। 79 : कि तुम उस की अदावत और गुमराह गरी को समझते और जब वोह जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उन से कहा जाएगा : 80 : कि वोह बोल न सकें और यह मोहर करना उन के येह कहने के सबब होगा कि हम मुशिक न थे, न हम ने रसूलों को झुटलाया। 81 : उन के आ'ज़ा बोल उठेंगे और जो कुछ उन से सादिर हुवा है सब बयान कर देंगे। 82 : कि निशान भी बाकी

لَوْ نَشَاءُ لَسَخْنَهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

अगर हम चाहते तो उन के घर बैठे उन की सूरतें बदल देते⁸⁴ कि न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते⁸⁵

وَمَنْ تَعْبُرُهُ نَجَسُهُ فِي الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَ

और जिसे हम बड़ी उम्र का करें उसे पैदाइश में उलटा फेरें⁸⁶ तो क्या वोह समझते नहीं⁸⁷ और हम ने उन को शेर'र कहना न सिखाया⁸⁸ और

مَا يَتَّبِعُنِي لَهُ ۖ إِن هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾ لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا

न वोह उन की शान के लाइक है वोह तो नहीं मगर नसीहत और रोशन कुरआन⁸⁹ कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो⁹⁰

وَيَحِقُّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوْلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ

और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए⁹¹ और क्या उन्होंने ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के

اَيْدِيْنَا اَنْعَمَّا فَهَمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنَاهُمْ فَبُنَاهَا رَكُوْبُهُمْ وَ

बनाए हुए चौपाए उन के लिये पैदा किये तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें उन के लिये नर्म कर दिया⁹² तो किसी पर सुवार होते हैं और

न रहता, इस तरह का अन्धा कर देते। 83 : लेकिन हम ने ऐसा न किया और अपने फज़्लो करम से "ने'मते बसर" उन के पास बाकी रखी तो अब उन पर हक़ येह है कि वोह शुक्र गुज़ारी करें कुफ़्र न करें। 84 : और उन्हें बन्दर या सुवर बना देते 85 : और उन के जुर्म इस के मुस्तदई थे लेकिन हम ने अपनी रहमत व हिकमत के हस्बे इक़्तिज़ा अज़ाब में जल्दी न की और उन के लिये मोहलत रखी। 86 : कि वोह बचपन के से जो'फ़ व नातुवानी की तरफ़ वापस होने लगे और दम बदम इस की ताकतें कुव्वतें और जिस्म और अक़ल घटने लगे। 87 : कि जो अहवाल के बदलने पर ऐसा कादिर हो कि बचपन के जो'फ़ व नातुवानी और सिंगरे जिस्म व नादानी के बा'द शबाब की कुव्वतें व तुवानाई और जिस्मे कवी व दानाई अता फ़रमाता है और फिर किब्र सिन और आखिर उम्र में इसी कवी हैकल जवान को दुबला और हक़ीर कर देता है, अब न वोह जिस्म बाकी है न कुव्वतें, निशस्त बरखास्त में मजबूरियां दरपेश हैं, अक़ल काम नहीं करती, बात याद नहीं रहती, अजीजो अकारिब को पहचान नहीं सकता, जिस परवर्दागार ने येह तग़य्युर किया वोह कादिर है कि आंखें देने के बा'द उन्हें मिटा दे और अच्छी सूरतें अता करने के बा'द उन को मस्ख़ कर दे और मौत देने के बा'द फिर ज़िन्दा कर दे। 88 : मा'ना येह हैं कि हम ने आप को शेर'रगोई का मलका न दिया या येह कि कुरआन ता'लीमे शेर'र नहीं है और शेर'र से कलामे काज़िब मुराद है ख़्वाह मौजूं हो या गैर मौजूं। इस आयत में इशारा है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम **صلّى الله تعالى عليه وسلم** को **الصلوات** तआला की तरफ़ से उलूमे अव्वलीन व आखिरीन ता'लीम फ़रमाए गए जिन से कश्फ़े हक़ाइक़ होता है और आप की मा'लूमात वाकेई व नपसुल अम्री हैं, किच्चे शेर'री नहीं जो हक़ीक़त में जहल है वोह आप की शान के लाइक़ नहीं और आप का दामने तक़दुस इस से पाक है। इस में शेर'र व मा'ना कलामे मौजूं के जानने और इस के सहीह व सकीम जय्यद व रदी को पहचानने की नफी नहीं। इल्मे नबिय्ये करीम **صلّى الله تعالى عليه وسلم** में ता'न करने वालों के लिये येह आयत किसी तरह सनद नहीं हो सकती **الصلوات** तआला ने हुज़ूर को उलूमे काएनात अता फ़रमाए। इस के इन्कार में इस आयत को पेश करना महज़ गुलत है। शाने नुज़ूल : कुपफ़ारे कुरैश ने कहा था कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा **صلّى الله تعالى عليه وسلم**) शाइर हैं और जो वोह फ़रमाते हैं या'नी कुरआने पाक वोह शेर'र है। इस से उन की मुराद येह थी कि **بَلِ الْفِتْرَةُ بَلٌ هُوَ شَاعِرٌ**। इसी का इस आयत में रद फ़रमाया गया कि हम ने अपने हबीब **صلّى الله تعالى عليه وسلم** को ऐसी बातिल गोई का मलका ही नहीं दिया और येह किताब अशआर या'नी अकाज़ीब पर मुशतमिल नहीं। कुपफ़ारे कुरैश जवान से ऐसे बदज़ौक़ और नज़्मे अरूज़ी से ऐसे ना वाकिफ़ न थे कि नस्र को नज़्म कह देते और कलामे पाक को शेर'रे अरूज़ी बता बैठते और कलाम का महज़ वज़्ने अरूज़ी पर होना ऐसा भी न था कि इस पर ए'तिराज़ किया जा सके। इस से साबित हो गया कि उन बे दीनों की मुराद शेर'र से कलामे काज़िब थी (मारक **وَمَلِ رُؤسُ الْبُرْهَانِ**) और हज़रत शैख़ अक्बर **قُدْسٌ رُؤتُهُ** ने इस आयत के मा'ना में फ़रमाया है कि मा'ना येह हैं कि हम ने अपने नबी **صلّى الله تعالى عليه وسلم** से मुअम्मे और इज्माल के साथ ख़िताब नहीं फ़रमाया जिस में मुराद के मख़फ़ी रहने का एहतिमाल हो बल्कि साफ़ सरीह कलाम फ़रमाया है जिस से तमाम हिजाब उठ जाएं और उलूम रोशन हो जाएं, चूँकि शेर'र लुग़ज़ व तोरिया और रम्ज़ व इज्माल का महल होता है इस लिये शेर'र की नफी फ़रमा कर इस मा'ना को बयान फ़रमा दिया। 89 : साफ़ सरीह हक़ व हिदायत। कहां वोह पाक आस्मानी किताब तमाम उलूम की जामेअ और कहां शेर'र जैसा कलामे काज़िब (घटिया को आ'ला से क्या निस्बत ?) **90** : दिल ज़िन्दा रखता हो कलाम व ख़िताब को समझे और येह शान मोमिन की है। 91 : या'नी हुज्जते अज़ाब काइम हो जाए। 92 : या'नी मुसख़्ख़र व ज़ेरे हुक्म कर दिया।

مِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٤٢﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبٌ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٤٣﴾ وَ

किसी को खाते हैं और उन के लिये उन में कई तरह के नफ़ा⁹³ और पीने की चीजें हैं⁹⁴ तो क्या शुक्र न करेंगे⁹⁵ और

اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لَعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٤﴾ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ

उन्हों ने **अल्लाह** के सिवा और खुदा ठहरा लिये⁹⁶ कि शायद उन की मदद हो⁹⁷ वोह उन की मदद नहीं कर सकते⁹⁸

وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ﴿٤٥﴾ فَلَا يَحْرُكُكَ قَوْلُهُمْ ۚ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ

और वोह उन के लश्कर सब गिरफ़्तार हाज़िर आएं⁹⁹ तो तुम उन की बात का ग़म न करो¹⁰⁰ बेशक हम जानते हैं जो वोह छुपाते हैं

وَمَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ

और ज़ाहिर करते हैं¹⁰¹ और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह

مُبِينٌ ﴿٤٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَ

झगड़ालू है¹⁰² और हमारे लिये कहावत कहता है¹⁰³ और अपनी पैदाइश भूल गया¹⁰⁴ बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को जिन्दा करे

هِيَ رَمِيمٌ ﴿٤٨﴾ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ

जब वोह बिल्कुल गल गई तुम फ़रमाओ उन्हें वोह जिन्दा करेगा जिस ने पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश

عَلِيمٌ ﴿٤٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ

का इल्म है¹⁰⁵ जिस ने तुम्हारे लिये हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से

93 : और फ़ाएदे हैं कि उन की खालों बालों और ऊन वगैरा काम में लाते हैं । 94 : दूध और दूध से बनने वाली चीजें दही मट्ठा वगैरा ।

95 : **अल्लाह** तआला की इन नेमतों का । 96 : या'नी बुतों को पूजने लगे 97 : और मुसीबत के वक़्त काम आएँ और अज़ाब से बचाएँ

और ऐसा मुम्किन नहीं । 98 : क्यों कि जमाद बेजान बे कुदरत बे शुज़र हैं । 99 : या'नी काफ़िरों के साथ उन के बुत भी गिरफ़्तार कर के हाज़िर

किये जाएंगे और सब जहन्नम में दाख़िल होंगे बुत भी और उन के पुजारी भी । 100 : येह ख़िताब है सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**

को । **अल्लाह** तआला अपने हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तसल्ली फ़रमाता है कि कुफ़र की तकज़ीब बे इन्कार से और उन की ईजाओं

और जफ़ाकारियों से आप ग़मगीन न हों । 101 : हम उन्हें उन के किरदार की जज़ा देंगे । 102 **शाने नुज़ूल** : येह आयत आस बिन वाइल

या अबू जहल और बक़ौले मशहूर उबय बिन ख़लफ़ जुमही के हक़ में नाज़िल हुई जो इन्कारे बअूस में या'नी मरने के बा'द उठने के इन्कार

में सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से बहस व तक्रार करने आया था, उस के हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उस को तोड़ता जाता था

और सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहता जाता था कि क्या आप का खयाल है कि इस हड्डी को गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बा'द

भी **अल्लाह** तआला जिन्दा करेगा ? हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने फ़रमाया : हाँ और तुझे भी मरने के बा'द उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल

फ़रमाएगा । इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस के जहल का इज़हार फ़रमाया गया कि गली हुई हड्डी का बिखरने के बा'द

अल्लाह तआला की कुदरत से जिन्दगी क़बूल करना अपनी नादानी से ना मुम्किन समझता है, कितना अहमक है, अपने आप को नहीं देखता

कि इब्तिदा में एक गन्दा नुत्फ़ा था गली हुई हड्डी से भी हक़ीर तर **अल्लाह** तआला की कुदरते कामिला ने उस में जान डाली, इन्सान बनाया

तो ऐसा मग़रूर व मुतकब्बिर इन्सान हुवा कि उस की कुदरत ही का मुन्किर हो कर झगड़ने आ गया, इतना नहीं देखता कि जो कादिरे बरहक़

पानी की बूंद को क़वी और तुवाना इन्सान बना देता है उस की कुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा जिन्दगी बख़्शा देना क्या बईद है और इस

को ना मुम्किन समझना कितनी खुली हुई जहालत है । 103 : या'नी गली हुई हड्डी को हाथ से मल कर मसल बनाता है कि येह तो ऐसी बिखर

गई कैसे जिन्दा होगी । 104 : कि क़तूरए मनी से पैदा किया गया है । 105 : पहली का भी और मौत के बा'द वाली का भी ।

تَوَقَّدُونَ ﴿۸۰﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ

सुलगाते हो¹⁰⁶ और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए उन जैसे

أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿۸۱﴾ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا

और नहीं बना सकता¹⁰⁷ क्यूं नहीं¹⁰⁸ और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का काम तो येही है कि जब

أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿۸۲﴾ فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ

किसी चीज़ को चाहे¹⁰⁹ तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है¹¹⁰ तो पाकी है उसे जिस के हाथ

مَلَكُوتٌ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۸۳﴾

हर चीज़ का कब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे¹¹¹

﴿آياتها ۱۸۲﴾ ﴿سُورَةُ الصَّفَاتِ مَكِّيَّةٌ ۵۲﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ۵﴾

सूरए मक्किय्या है, इस में एक सो बियासी आयतें और पांच रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَالصَّفَاتِ صَفًّا ۚ فَالزُّجُرَاتِ زُجْرًا ۚ فَالتَّلَاتِ ذِكْرًا ۚ إِنَّ الْهَكْمُ

क़सम उन की कि बा काइदा सफ़ बांधें² फिर उन की कि झिड़क कर चलाएं³ फिर उन जमाअतों की कि कुरआन पढ़ें बेशक तुम्हारा मा'बूद

لَوْاحِدٌ ۚ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿۵﴾

ज़रूर एक है मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है और मालिक मशरिफ़ों का⁴

106 : अरब के दो दरख़्त होते हैं जो वहां के जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं, एक का नाम मर्ख है दूसरे का अफ़ार। उन की खासियत यह है कि जब उन की सब्ज शाखें काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उन से आग निकलती है, बा वुजूदे कि वोह इतनी तर होती हैं कि उन से पानी टपकता होता है, इस में कुदरत की कैसी अजीबो ग़रीब निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद, हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी को जलाए, जिस कादिरे मुल्लक की येह हिकमत है वोह अगर एक बदन पर मौत के बा'द जिन्दगी वारिद करे तो उस की कुदरत से क्या अजीब और इस को ना मुम्किन कहना आसारे कुदरत देख कर जाहिलाना व मुआनिदाना इन्कार करना है। **107** : या उन्हीं को बा'दे मौत जिन्दा नहीं कर सकता ? **108** : बेशक वोह इस पर कादिर है। **109 : कि पैदा करे **110** : या'नी मख़्लूक़ात का वुजूद उस के हुक्म के ताबेअ है। **111 : आखिरत में। **1** : सूरए والطِّفْتُ मक्किय्या है, इस में पांच रकूअ, एक सो बियासी आयतें और आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार आठ सो छब्बीस हर्फ़ हैं। **2** : इस आयत में **al-lah** तबारक व तआला ने क़सम याद फ़रमाई चन्द गुरौहों की या तो मुराद इस से मलाएका के गुरौह हैं जो नमाज़ियों की तरह सफ़ बस्ता हो कर उस के हुक्म के मुतज़ि़र रहते हैं या उलमाए दीन के गुरौह जो तहज़ुद और तमाम नमाज़ों में सफ़े बांध कर मसरूफ़े इबादत रहते हैं या गाज़ियों के गुरौह जो राहे खुदा में सफ़े बांध कर दुश्मनाने हक़ के मुकाबिल होते हैं। **3** (مارك) : पहली तक्दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद मलाएका हैं जो अब्र पर मुकर्र हैं और उस को हुक्म दे कर चलाते हैं और दूसरी तक्दीर पर वोह उलमा जो वा'ज व पन्द से लोगों को झिड़क कर दीन की राह चलाते हैं, तीसरी सूत में वोह गाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं। **4** : या'नी आस्मान और ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात और****